

### नोटों का कागज

**\*२५६. श्री नवाबसिंह चौहान :** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि नोटों का कितना कागज प्रति वर्ष आयात किया जाता है और देश इस सम्बन्ध में कब तक आत्मनिर्भर हो जायेगा ?

### CURRENCY PAPER

\*259. SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN: Will the Minister of FINANCE be pleased to state the quantity of currency paper which is imported every year and the time by when the country will become self-sufficient in this respect?

**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री बी० आर० भात) :** आजकल लगभग २१०० मीट्रिक टन नोटों का कागज (करेंसी पेपर) हर साल विदेशों से मंगाया जाता है। अभी यह बताना सम्भव नहीं कि इस सम्बन्ध में देश कब आत्म-निर्भर होगा, लेकिन जब होशंगाबाद के सिक्योरिटी पेपर मिल में पूरी तरह से कागज बनने लगेगा, तो हमारी ज्यादातर जरूरतें पूरी हो जायेंगी।

[THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI B. R. BHAGAT) : About 2100 tonnes of currency paper are at present imported annually. It is not possible to indicate at this stage, when country will become self-sufficient in this respect, but the major part of our requirements will be met when Security Paper Mill at Hoshangabad goes into full production.]

**श्री नवाबसिंह चौहान :** क्या होशंगाबाद में जो करेन्सी पेपर की मिल खुल रही है उसमें काम शुरू हो गया ? अगर शुरू हो गया है तो उसकी प्रोडक्शन कैपेसिटी क्या है और कब तक यह पूरे तरीके से चलने

लगेगा और इसके लिये टेक्निशियन्स वर्ग रह, जो काम करने वाले हैं, उनकी क्या व्यवस्था की जा रही है ?

**श्री बी० आर० भगत :** यह काम तो शुरू हो गया है। सितम्बर, १९६४ में जब इस मिल में पूरी कैपेसिटी पर काम चालू हो जायेगा तो २,०३२ टन करेन्सी और बैंक नोट पेपर इसमें बनेगा। इंग्लैण्ड की जो कंपनी है मेसर्स पोर्टलस लिमिटेड, उनके साथ इसमें टेक्निकल अग्रेन्जमेंट हो गया है।

SHRI B. K. GAIKWAD: May I know-the cost price of such paper imported every year?

SHRI B. R. BHAGAT: We are importing Rs. 1'6 crores worth of such-paper.

SHRI RATANLAL KISHORILAL-MALVTYA: What is the estimated cost of the plant which is being fixed for the manufacture of this paper?

SHRI B. R. BHAGAT: The cost is likely to be of the order of Rs. 6-85 crores.

### प्रादेशिक भाषाओं में लोकप्रिय साहित्य का प्रकाशन

**\*२६०. श्री भगवत नारायण भार्गव :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने विश्वविद्यालयों से अनुरोध किया है कि वे प्रादेशिक भाषाओं में लोकप्रिय साहित्य प्रकाशित करें।

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने उन को इस साहित्य का व्योरा बतलाया है ; और